बालाबोध

अर्थात्

स्त्रियों के पढ़ने की प्रथम पुस्तक

जिसको

ज़िला जौनपुर की बोली और रीति के

अनुसार ॥

——:००:——

अवध देश के श्रीयुत चीफ़ कमिश्नर साहब बहादुर के

मुन्सरिम पण्डित छोटई तिवारी ने

बनाई ॥

——:०:——

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपे ॥

सन् १८६४ ई०

बालबोध

अर्थात्

स्त्रियों के पढ़ने की प्रथम पुस्तक

जिसको

ज़िला जौनपुर की बोली और रीति के

अनुसार ॥

——:oo:——

अवध देश के श्रीयुत चीफ़ कमिश्नर साहब बहादुर के

मुन्सरिम पण्डित छोटई तिवारी ने

बनाई

——:o:——

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापे खाने में छपी

सन् १८६४ ई०

भूमिका

—:o:—

मैंने अब तक कोई पुस्तक ऐसी नहीं देखी कि जिसमें औरतों की जानी हुई बातें और उनके मन लगने की कहानी होवें अक्षर चीन्ह के पीछे वे सहारः अपने ख्याल से बाहेर की बातें जलदी पढ़ना मोशकिल होताहै, और वे जलदी २ पढ़ने से अरसा लगता है, और अरसा लगने से तबियत उचटि जाती है इसवास्ते मैंने पहिले वे मात्रा की दोहरफी बातें लिख के धीरे धीरे मात्रा वाली दो हरफी तीन हरफी और चौहरफी बातें लिखाहै तिस के पीछे एक २ किसम की चीजों का नाम जो राति दिन स्त्रियों के देखने और सुनने मे आती हैं बाद इसके उनकी तबियत लगने के वास्ते शादी वगैरेह के दस्तूरात और गीतें लिखा है ॥

छोटई तिवारी

लखनऊ
ता० १० अगस्त १८६४ ई०
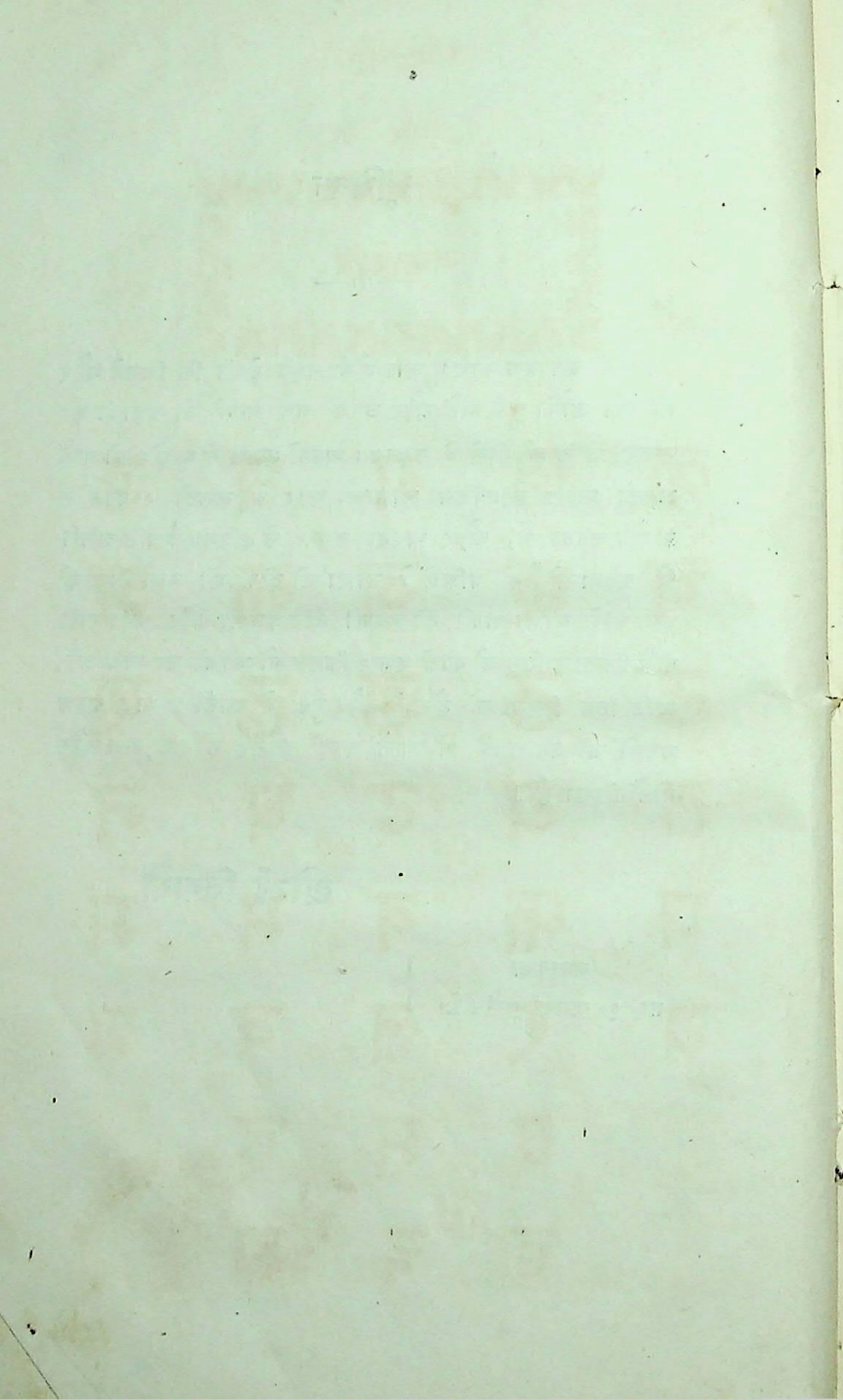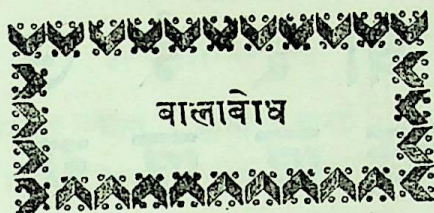
बालबोध

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
	ष	स	ह	
	क्ष	त्र	ज्ञ	

॥ श्री ॥

अ आ इ ई उ ऊ
ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ
ओ औ अं अः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

---

१ पाठ ॥

बाराखरी

क	का	कि	की	कु	कू
के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू
खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू
गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू
घे	घै	घो	घौ	घं	घः
ङ	ङा	ङि	ङी	ङु	ङू
ङे	ङै	ङो	ङौ	ङं	ङः

इसी तरह सब अक्षरों पर समझना ॥

२ पाठ ॥

दो अचरों को बातें

बल खल चल छल जल थल दल
नल पल फल वल भल कस जस
तस दस सम दम हम नम कम
यम सग गज तज धज घट नट
पट सठ खत छत मत सत पद
बद छन तन धन सन जप झप
तप उफ कब जब ढब तब सब
कम गम झम दम नम यम सम
घर डर नर पर नस रस तह
दह नह पह वह हम कार खार
झार डार ढ़ार तार थार धार पार
फार वार भार मार सार काल चाल
छाल जाल झाल टाल ताल दाल पाल
माल हाल दास नास कैसा जैसा तैसा
कौन जौन मोसे तोसे इहां वहां बैठा
उठा आर पार पांडे दूबे चौबे गाडू
बैल छोड़ि ओड़ि लोटा टाठी दही दूध
हीरा मोती घास पात जव गोहूं चना
दाल भात तीता मीठा सोना रूपा तामा
चांदी गुरु चेला ।

३ पाठ ॥

तीन अच्छरों कीं बातें

सटर पटर कमर अमल असर
कसस जसस तसस कटर खरल
कलम कमल रमल टहल सहल
पहल महल जगत भगत जनम
कादर बादर चादर आवन कीरत
तीरथ सेवक केवट केकर तेकर
कोहड़ा बतिया बछिया कूकुरि पिलई
मुसरो मटरि रहरि थरिया गगरी
गगरा हसिया खुरपी चकरी मूसर
चलनी पिसान नमक लड़का लड़की
बिरिया बेटवा बनिया बकाल अगिला
पछिला लहना उधार

---

४ पाठ ॥

चारि अच्छर कीं बातें

अजगर बिषधर हरिअर जगमग
लगभग जबतब असतस सबकेउ
अगमन बारबार आरपार बरसात
बेवहार भलमंसी उपकारी हितकारी

सरकारी तरकारी खरबूजा तरबूज बड़हर झरबैला महतारी पितिश्रानि ससुरारि सढुश्रानि भगवान हनुमान रघुवीर लछिमन।

---

५ पाठ॥

खाने की चीज़

दूध दही घी चीनी मिठाई रोटी दाल भात तरकारी पेड़ा बरफी बरा फुलौरी सेवई जाउरि कढ़ी सेब चखिड़ी मुलगुला रिकवछ सोहारी कचौरी मलाई कलौंजी अचार मुरव्वा चटनी सिरका

---

६ पाठ॥

दवाई का नाम

कालानमक सोचरनोन जायफल चिरायता आदी पीपरि बैतरा सोंठि अफीम कपूर हींग मिर्चा मिर्च बंशलोचन बावभिरंग बनफसा गावजुवां मैनफर भंगरैश्रा मुंडी नागरमोथा गदहपुर्ना की जड़।

७ पाठ ॥

मसाले का नाम

धनियां तेजपात लौंग इलायची मिर्च मिर्चा हरदी हींग सोंठ दालचीनी तेजबर तज कपूर खैर सोपारी गरी बैतरा ॥

---

८ पाठ ॥

मेवा का नाम

छोहारा मुनक्का तालमखाना अनार अंगूर बदाम चिरौंजी किशमिश मुनक्का फालसा खिन्नी तूत केरा अमरूत नौरंगी रंगतरा ॥

---

९ पाठ ॥

बरतन का नाम

थरिया लोटा टाठी कटोरा सड़सी चिमचा आबखोरा गगरी गगरा बटुली करोरा कटोरियां कराही डेगची

---

१० पाठ ॥

कपड़े का नाम

धोती सारी अंगा मिरजई पगड़ी
डुपटा लहंगा फरिया टोपी पैजामा
चुंदरी खोल गलेफ दोहर अंगखी
जामा अंगिया घघरी ओढनी झुलवा
कुरता नैनसुख तनजेब मारकीन गजी
गाढा बुक मलमल चिकन चुंदरी
छींट बनात दुशाला रूमाल धुस्सा
कमरा कमरी दरी गलीचा जाजिम
दुइसूती टाट ॥

---

११ पाठ ॥

रिशतेदार का नाम

मा बाप भाई बहिन बिटिया बेटवा
नाती पोता सार ससुर समधी साढू
बहनोइ मौसा मौसी सरहज सढुआइन
चाचा चाची फुफा फुफू नाना नानी
मामा मामी दादा दादी काका
काकी ॥

---

१२ पाठ ॥

अनाज का नाम

जव गोहूं मटर चना गोजई जोन्हरी मकरा काकुन जुश्रार बजड़ा सामा कोदों धान साठी सेल्हा उर्द बजड़ी केराव ॥

---

१३ पाठ ॥

जानवर का नाम

बैल गाई भैंस हाथी घोड़ा ऊंट गदहा कुत्ता बिल्ली चूहा खरहा हरिना बारहसिंघा स्यार गेंडा बाघ चीता बकरी खसी ॥

---

१४ पाठ ॥

गिरस्ती की चीज़ का नाम

हर फार जुश्रा कुदारि फरसा खुरपी हसुश्रा सूजा नार मोट नाधा पगहा बरारी लेजुर पांचा दवरी हेंगा दावी कराह कोल्हू जाठि कतरी ढेंकुश्रा ॥

---

१५ पाठ

जगह का नाम

घर दुआर कोठा अटारी सीढ़ी
अंगना छत कोठरी भीतर बाहेर
अगवार पिछवार ओरी बेदी चौक
कौन आंत कोली गोखा ताख

---

१६ पाठ

पेड़का नाम

आम महुआ अमिली बैरि औंरा
पीपर बर गूलरि पाकरि जामुन
बिलबिल सिरसा छितिउन सिहोर
लहसोड़ा बड़हर सेमर बबुर बेल
ढाक परास करहर नीम बकाइन

---

१७ पाठ

धरती की शकल का नाम

परती ऊसर पहाड़ ताल पोखरा
कुआ आबादी खेत बाग जंगल
खरिहान डीह खड़हर खंधक नदी
नार किला कोट बन

१८ पाठ

जिंदगी का हाल

जनम छठी बरही अन्नपरासन
कनछेदन मूंडन बरच्छा जनेव तिलक
बिआह गौन दोंग गृहस्ती बैराग

---

१९ पाठ

जिंदगी का हाल सब देश में यही है परंतु उसमें खुशी करने और साधारण काम करने के दस्तूर में फरक है और गाने बजाने और बोली का भी फरक देहात और शहर में है जौन पुर के ज़िले में जैसा दस्तूर है और जिस तरह से हर एक काम में औरतें गाती हैं सो लिखते हैं ॥

---

२० पाठ

लड़की होने से कुछ खुशी करने का दस्तूर नहीं है बेटा होनेसे गाना बजाना आदि तरह तरह की खुशी होती है बड़ी शुभ की गीति सोहर है जिसको औरतें गाती हैं-पांच सोहर लिखते हैं ॥

२१ पाठ

पहिला सोहर

ओहि दिन राम जनम भए गोकुला अनंद भए मथुरा में भैल अंजोर अवध राम जनमे ॥ दियना हेरत नहिं पावें चेरिया जगावें चेरिया सुबरन आरती लेसावें अवध राम जनमे ॥ सुपवा हेरत नहि पावें चेरिया जगावें चेरिया सोने के सूप पैढ़ावें अवध राम जनमे ॥ कपड़ा हेरत नही पावें चेरिया जगावें चेरिया पियर पितम्मर ओढ़ावें अवध राम जनमे ॥ पैसा हेरत नही पावें चेरिया जगावें राजा तोड़वन मोहर लुटावें अवध राम जनमे ॥

---

२२ पाठ

दूसरा सोहर

अन्न तो तजेउ कौसिला रानी पनिया न घूटैं राजा तोहिपर तजवेंउ परान तो एक संतति बिनु ॥ हंकरहु नगर के बिप्र बेगिहि चलि आवहिं बाउरि रानी कौसिला देई तेहि समुझावहिं ॥ आए हैं बिप्रबराह्मन

डेहरि यहि ठाढ़ भए रानी दशरथ ऐसा पुरुष वा काहे को दोष लावहु ॥ लेहु तु अक्षत सुपरिया बेलेह कै पतिया रानी पुजहु महादेव के पिंडी 'संतति तोहरे जनमे ॥ होत बिहान पह फाटत राम जनम भए बाजै लागे आनंद बधैया उठन लागे सोहर ॥ सोने के खरौआं राजा दशरथ डेहरि अहि ठाढ़ भए रानी कहहु तो पटना लुटाओं राम तोहरे जनमे ॥ मांगहु सुरही गइया डेवढि अहि ठाढि करहु लेहु पितांवर धोती बम्हन के संकलपहु ॥ सोने के खरौंआ राजा दशरथ हेरहि अवध पुर मरही पियासन नहिं पावैं बिप्र वराम्हन धोतिया संकलपैं ॥ कलजुग में बाम्हन जनमेउ अहो बाम्हन जनमेउ घर घर मांगेउ चुटुकिया दुआरे फेरिया लायेउ ॥

---

२३ पाठ

तीसरा सोहर

चंदन केरि चौकिया तो मोतियन झालरि तेहि चढि राम नहांइ सितल रानी बिहसैं ॥ मचिअहि बैठी सितल रानी सब

सखि पूछहिं कौन कियेउ व्रत नेम राम बर पाएहु ॥ माघहि मास नहानिउ आगिनि नहिं तापेउ बिधिसे रहेउ अतवार राम बर पाएउ ॥ कातिक मास नहानिउ सुरुज पैयां लागिउं तुलसी के दियना चढ़ाएउं राम बर पाएउं ॥ भूखी रहिउं एका दशि-या दुआदशि पारन भूखै बाम्हन खियाएउं राम बर पाएउं ॥

---

२४ पाठ

चौथा सोहर

ठाढि तिरियवा मन झंखहिं सुनहु सितल मैया मैया बिनु रे बालक घर सूनमै तपसिनि होवेउं ॥ चुप रहु तेवई तू चुप रहु जियरा सुचित रहु तेवई सात बालक तोहैं देवेउं अंगन भरि खेलिहैं ॥ सात बालक मैया देवेहु आगन भरि खेलिहैं ॥ मैया कोरी नदिया दहिवा जमैहौं तोहैं जुड़वैहों ॥

---

२५ पाठ

पांच वा सोहर

भितरा से निसरी है राधे बरोठवें ठाढि भई ॥ हंसि हंसि पूछहि यसोदा काहे बहु

अनमन ॥ काव कहैं मोरी सासु तो लाज की बतियां सासु हमरी महल बिच चोरी भइ तिलरी चोराइ गई ॥ पहिरहु अनवट बिछुआ पैल पर घूघुर बहु ओढि लेहु झीन पिछौरा ढूंढहि बन हेरहु ॥ अस जिनि जानहु सासु कि तिलरी लाह के तिलरी मेंहीरा ओलाल तिलरिया सोहर कै ॥ अस जिन जानहु माई कि मुरली बांसेह कै ॥ ॥ मुरली मे प्रण अधार मुरलि आ मे जिउ बसै ॥

---

२६ पाठ

लडके की छटी

लडके के जनम से छठे रोज छठी होती है उसदिन भीति में आदमी का पुतरा बना के ने गिन को नेग दिया जाताहे सबसे बड़ा हक ननद का होताहै, उस दिन गाना बजाना होताहै, उस दिन का सोहर और तरह का होताहै, ॥

---

२७ पाठ

छठीका सोहर

चैतहि कै तिथि नौमी तो नौबत बाजै बाजै राजा दशरथ दुआरे कौसिला रानी मंदिर ॥ मिलहुन सखिय सहेलरि मिलि जुलि चलो राजा के जनमें हैं राम करिय नेवछावरि ॥ केहुं सखि नावा है बाजू बंदा केहु कजरावट केहु रे दखिन वा की चीर करहि नेवछावरि ॥ भितरा से निकरी कौसिल्या अंगनवहि ठाढि भई रानी धइ धइ हृदय लगावैं करहि नेव छावरि ॥ रामके मथवा चंदन वा बहुत निक लागइ दिहा है गुरुअ वशिष्ट बहुत निक लागइ ॥ राम कै अंखिआ रतनारि कजरवा भलसोहै ॥ दिहा है फूआ सुभद्रा तो पतरी अगुरी सनी ॥ राम के मथवा लुटुरिया बहुत निक लागै ॥ जैसे फुलेह विच कलिया बदर छवि लागै ॥ राम के गोडवा घुघुंरुवा बहुत निक लागै ॥ नान्हे गोड़े चलें बकैआं देखैं राजा दशरथ ॥

---

२८ पाठ

लड़के कीबरही

जनम के दिन से बारहे रोज बरही होती है उस दिन और भी बड़ी खुशी होतीहै, भाई बंधु की तवाज़: होतीहै, उस दिन का सोहर और ही होताहै, बार हो रोज बंदूक को आवाज़ होती हैं, ॥

---

२९ पाठ

बरही का सोहर

छोटै पेड़ कुिउलिआ तो सोतिया करहि गई तेहि तर ठाढि हरिनिआ हरिन बाट जोहै ॥ कब दौं अइहैं हरिना ढूंढहि बन जावै आजु नंद घर बरही हरिन मारि जैहैं ॥ मचिअहि बैठी यशोदा तो हरिनि अरज करै रानि बरु मोहि मारि अड़ावहु हरिन जिनि मारहु ॥ जाहु हरिनि घर आपन हम नहि मानव बिहने बाबुल कै बरहिया हरिन मरवाउब ॥ अगवा के घोड़ बाराम चलेर पछवा लछन चले अरि पास छेकेनि बहेलिया हरिन मारि आए ॥ सभवहिं बैठे राजा दश

रथ हरिन अरज करै राजा ससुआ सोझै जेवनार खलरिआ मोहि बकसौ ॥ जाउ हरिनि घर अपने हम नहि मानब खलरी कै खझरी मिढ़ा छब बबुल के दुलारब ॥

---

३० पाठ

अन्न परासन

छठे महीने अन्नपरासन होता है याने लड़के को अन्न खिलाया जाता है उस दिन भी बिरादरी खाती है और सोहर होता है लड़की का अन्न परासन पाचवे महीने होता है-उस दिन का सोहर नया नहीं होता है ॥

---

३१ पाठ

मूड़न कनछेदन

पहिले या तीसरे या पाचवें वरिस लड़के का और लड़की का बार बनवाया जाता है और कान छेदा जाता है इसकी गीति अलग होती है

---

३२ पाठ ॥

मूड़न कनछेदन की गीति

जब पुत रहेउ तु बार और गोभवार टेढ़ि पैडिआ न चलेनि मैआ तोहारि ॥ जबपुत रहेउ तु बार और गोभवार भांटा बिरोआ न खाएनि मैआ तोहारि ॥ जब पुत रहेउ तु बार और गोभवार कार पियर नहि पहिरेनि मैआ तोहारि ॥ सभबहि बैठे नंदराम लड़हि कृष्णराम सोने रूपे छुरवा गढ़ावहु लुटुरी मुड़ावहु ॥ घोड़वहि चढ़ल नंदराम नौआ घर जाहि आजु मोरे नाती क मूड़न बेगि चलि आवहु ॥ अरे अरे फूफू सुभद्रा देइ झलरि परोछहु पहिरै के देवेउ म झिन सारी और दखिन सारी, झलरिऔं यगिरोपा, झलरिआ मोरि लाड़िली, झल-रिआ बड़ि सुन्दरि ॥

---

३३ पाठ

जनेव

आठए बरस जनेउ होता है और न हो-सकै तो शादी से पहिले जब चाहै तब होय जनेउ में मांड़व छाया जाता है, कोहबर

बनता है मातृंका पूजा होता है, सिल पोहना होता है मटि मंगरा होता है, जनेउ को गीति और तरह की होती है, मूंड़न की भी गीति गाई जाती है ॥

---

३४ पाठ ॥

जनेउ की गीति

कुइआं की जगत पर सुजेह कर घान, उहा उहा नंदराम करैं असनान, तहां मुच कुन्दराम रुदन पसारेनि, बिनुरे जनेवा मोरि ओछरि पांति, बैठइन पावों लखन रामपांति ॥ लेहु जनेउआ उत्तमहोउ, अब जाय बैठहु बसु देव राम पांति, अब जाय बैठहु जनक राम पांति ॥

---

३४ पाठ ॥

बरछा

इसके पीछे बिआह की बातें होती हैं लड़की के बिआह में भी गीत गाई जाती हैं बिटिआ के बिआहे में कम खुसी होती है बेटे के बिआहे में बड़ी खुशी होती है बिआह होनेसे पहिले बिटिया की तरफ से ब्राह्मण

और नाऊ लड़का देखने को जाते हैं जहां लड़का पसंद होता है वहां पहले बतौर परचै के गुड दही खाते हैं और जनेउ और रुपैआ बतौर सगुन के देते हैं उसको बाछा कहते हैं-उस समय की गीति को गारी कहते हैं ॥

---

३६ पाठ ॥

बरछा की गारी

सोनेक कलस लेइकै निसरी कहारिन बारिनि पाव पखारी रस बास सुबासित गारी ॥ गंगा क पानी कलस भरि मांगनि लेइ अदहन मह डारी रस बास सुबासित गारी ॥ चाउर धोइनि और से उरद लेइ अदहन मंह डारी रस बास सुबासित गारी वरा वनाइनि और फुलौरी लेइ इहियन मह डारी रस बास ० ॥ मासु मछरिया और से तीतिर कडुयह तेल बघारी रस बास ० ॥ एतना जेवन कैकै निसरी कौसि-ल्या देइ रामलछन महातारी रस बास ० ॥

---

२७ पाठ ॥

तिलक

बिवाह होने को जब थोड़ा दिन बाकी रहता है तब लड़की का भाई या चचा मे दस पांच आदमी जाकर थरिया में अक्षत हरदी सोपारी, नरिअर दूब जनेव कपड़ा और नगदी रखिके लड़के के माथे में हरदी दही और अक्षत का टीका लगाते हैं इसी दिन से दोनों जगह शादी की तैआरी होने लगती है-और इस रोज से मटि मंगरा तक रोज गांव भर की औरतें लड़का और लड़की के घर बिआह की गीति गाती हैं ॥

---

२८ पाठ ॥

तिलक की गीति

गाई के गोबरासे अंगना लिपायनि गज मोती चौक पुरायनि ॥ आजु नंद घर अनंद बधाव मोतिन्हरे ओन्ह करि अंजुरो भराइनि ॥ अजु दशरथ घर आनंद बधाव मोतिअन्हरे ओन्ह करि अंजुरी भरायनि ॥ आजु बसुदेव घर आनंद बधाव मोतिअन्हरे ओन्ह करि अंजुरी भराइनि ॥

३९ पाठ ॥

विआहकी गीत

मचिअहि बैठलि रानी कौसिला देई नैनन ढारहिं आंसु ॥ जीवन जनम मोर एकहु न स्वारथ मोरे घर राम कुंआर ॥ भलि वैरानिहु रानी कौसिला देई केन्हु तोर हरल गियान ॥ ऐसे मरहु रानी राम जनम कंह अब लरहु राम विआह ॥ झिन २ कपड़ा पहिरि राजा दशरथ घोड़े पिठि भैं असवार ॥ हथवां लिहेनि सुबरण कै छड़ि-अवा चले राजा ऋषि के दुआर ॥ अगना बोहारत चेरिआ लौंडिआ धाइ बखरि अहि जाइ तीनि तिलोक कर रैआ राजा दशरथ ठाढ अहैं ऋषि के दुआर ॥ हथवा कि लिहे ऋषि झंझरा गेडुअवा गेडुआ गंगाजल पानि ॥ पनिआ पिअहु खट बैठौ राजा दशरथ कहौ अजोध्या कै वात ॥ हमरी अजोधिआ तौ छेम कुशल वा चाहिय कुशल तोहार ॥ मोरे घर बाटी सोता रनिअवां तोरे घर राम कुआर ॥ सावन मास लगन नहिं बाटै आवै देहु जेठ बैसाख ॥ जेठ बैसाख कै उत्तम लगनिआ राम औ सोता विआह ॥

४० पाठ ॥

विआह की २ गीति

बेगि सोपरिया बाबा नौआ के दीहेनि नेवतेहु कुल परिवार ॥ नेवतेहु जाय प्रयाग बनारस दिल्ली शहर गुजरात पांच पंडित नौ मुनिजे नेवतेहु साजि चलै बरियात ॥ जाय बरात शहर नगिचानी गंगा जमुन के तीर ॥ ठाढि निकटक भिजै राजा समधी केहि बिधि उतरहु पार ॥ बेल बबुर कै नैआ बनवायनि आम अमिलि करु, आर ॥ झूंसी शहर बाबैं के बटबा बलावा कसि दल आवै वारात ॥ आई बरात गोइंडे नगिचानी तनिगये तंबुआ निशान ॥ शंख शब्द बंसिआ मुरचंगा बहुविधि उडै गुलाव जाई बरात दुआरेह लागी होइ दुआरे क चार ॥ सुर मुनि चतुर सो ध्यान लगायेनि राम कै बदन निहारि ॥ जाइ बारात मडौअहि लागी इन्द्रन्ह आरती लाई ॥ धनि धनि भागि तोहरि राजा दशरथ काउ जनम हम लीन्ह ॥ जबरे सीतल बेटी मडयेह आई चांद सुरुज छपि जांय ॥ सोन सिंधोरिया सोहाग चुन्दरिया राम के दाहिनि

बांह ॥ राम औ सीता चौक पर पैठें बिप्रन्ह वेद उचारि ॥ तीनिहुं लोक में अस वर नांही राम संकर सीता गौरी ॥ भैल बियाह राम कोहबर चले सखिया झरोखेहि लागीं ॥ सुन्दर बदन सुमुख रघुपति कर देखत बदन छिपाय ॥ चन्द्र छपैं जल वादर आये पान पतर पर बूंद ॥ कृष्ण छपें सखि आरति लायें आजु खुशी के जून ॥ धनि २ राम जहां पगु ढारैं तीरथ राज प्रयाग ॥ धनि २ भागि सिता सतवंती राम से भैल वियाह ॥

---

४१ पाठ ॥

मटि मंगरा

बिबाहे से दुइ दिन पहिले मटि मंग रा होता है अर्थात गिरस्ती का सब कारोबार बंद किया जाता है इस को ताकीद की तरह घर चकरी लोटा मूसर ढोरी सूप सिल और जरूरी आद सी भी ए घे जाते है याने रक्खा बधा जाता है ताकि यह सब चीज केतनाही जरूरत हो कही जुम्भिम्न वारे गांव भर की ओर तैं जमा होती हैं सबको मीठा दिया जाता है और पाच सात वे बिआही लड कि-

यों के मूंडे तेल और माथे में सेंदुर का टीका लगा के तब सोहागिन औरतों के मांथे तेल और सेंदुर लगाया जाता है, जनेउ के माफिक बिआहे में भी बांस गाड के माडौ छाया जाता है मटि मंगरा के पहिले जबै सादत हो तबै छाया जाता है ॥

---

४२ पाठ

मटि मगरा को गीत

केंइ दौ बोआ है लालि सरसै आ के दौ पेरावन जाइ ॥ केकरी ककहिआ मांग सवारौं केकरेह सेंदुरे सोहाग ॥ बाबा मोरे बोआ है लालि सरसैआ माई पेरावन जांइ ॥ भैआ की ककही में मांग सवारबंउ हरि जिउ के सेंदुरे सोहाग ॥

---

४३ पाठ

बेटवा के बिआहे में एक रोज पहिले और बिटिआ के बिआहे में बिआहे के रोज भतवानि होती है भतवानि के दिन मंची का पूजा होताहै सिलपोहना होता है गौरि गनेश

का पूजा होता है और ऐंधि तोराई जाती है याने कूआ और तालाव पर लडकी या लडका औरतों के साथ गाते बजाते पूजा करने जाते हैं और उस दिन उर्द और भात खाने की रीति है इसी से भतवानि नाम पडाहै, मटि मंगरा और भतवानि के दिन भोर भी जागाया जाताहै ॥

---

४४ पाठ

ऐंध तोराने की गींत

काहेह पुरइन गरुही गंभीर काहेह मोरि जगि रोपा ॥ मटिअन्ह कादवन्ह गरुही गंभीर पतवन्ह तोरी जगि रोपा ॥ काहेरे कवनि देइ गरुही गंभीर काहेह मोरि जगि रोपा ॥ पुतवां पतोहिअन्ह गरुही गंभीर नति अन्हमोरि जगि रोपा ॥

---

४५ पाठ

बिआह

बिआहे के दिन बिटिआ का बाप, मा, और चाचा, चाची, जोपुषी पुरनिआ होतें हैं सो सब दिन भरि वे दाना पानी भूखा रहते हैं

राति को जब साइति बनती है तब बर मड़ए में जता है और सब के सामने गौरि गनेश का पूजा करिके लडकी का बाप लडकी का हाथ पकडके थोडा सा पानी हाथ में लेके कुछ रूपैया मोहर लेके मंत्र की रीत से बरके हाथ में पकडा देता है इस को पाणिग्रहण कहते हैं, जबसे बरात घरसे निकलती है तब से लबट ने तक मे इतने काम होते हैं जिस के वास्ते और २ गीत गाई जाती हैं ॥

१ नेहछू
२ बरात का घरसे निकसना
३ दुधार पूजा
४ बर का मड़ए में आना
५ पाणि ग्रहण
६ सुमंगली
७ लावा की परछन
८ भंवरी
९ परिछन
१० कौरी सेरवाना

—

४६ पाठ

नहछू

घर घर फिरइ नौनियां तौ गोतिनी बलावै राम लाल कर नेहछू चलऊ सब देखै ॥
केहु नावा चुटकी मुदरिया केहू नावा रूप
केहु नावा रतन पदारथ भरि गहै सूप ॥
कहकही जे चुटकी मुंदरिया सुमिरहि रूप कौ
सिला रानी रतन पदारथ भरि गहै सूप ॥
मडयइं झगरै नौनिया कि यह सबयोर राम लला कर नेहछू तो लेबेंउ मैं थोर ॥ जिन तूं झगरहु नाउनि नेहछू बटोरहु राम बियहि घरलवटहि देबेउ मैं थोर ॥

---

४७ पाठ

बरात निकसने की गीति ॥

तूतौ चलेऊ पूत गौरी बियाहन दुधवा क मोल दै लेहुरे ॥ गाइ दूध मोलवा भैसि दूध मोलवा माई क दूध अन मोलरे ॥ सरग तरैया के गनव मोरि माई दूधवा क मोल केन्ह देवरे ॥ हम अहि माई तोहरा दुलरु आ मोरि धन दासी तोहारि रे ॥

४८ पाठ

दुआर पूजा की गीति

वरि भैया कहहि दशरथ राजा हम तौ आवत हैं दल जोरे। हाथ जोरे बिनवैं जनकराजा समधी तोहरे जोगित हम नाहीं॥ यही रीति से वर के चाचा वो लड़की के चाचा के नाम से गाया जाता है॥

---

४९ पाठ

दुआर पूजा की दूसरी गीति

अरे अरे भैया मुचकुंद राम मिलने के जाब कि नाही॥ मिलने कै कौनि बड़ाई बहिनि हाथपैत कुछु नाहीं॥ लेहुन हासिल घोड़वा भैया और बिरा दस पान॥ घोड़वा लेइ दिहेउ जेठ के बीरा बहनोइआ के हाथ॥

---

५० पाठ

मड़ए मे आने की गीति

माई जे घेरिया छपाबा जैसे घिउ गागरि॥
बाबैं जे घेरिया निसारा जैसे जल साछर॥
छोड़हु तूरानी पूत से घोतिया तोरी माई

बिनाबा है हो पहिरौ तूरानी पंत से धोतिया तोरी सासु बिनाबा है हो ॥

---

५१ पाठ

पाणिग्रहण की गीति

अरेअरे भैया मुचकुंद रामा धरिया नटूटै धार टुटे पति जैहैं कुलगुति तोरि होइहैं ॥ इसी तर लड़की के सब भाइयो का नाम लेके गाया जाता है

---

५२ पाठ

सुमंगली की गीति

हटिअहि सेंदुरा मंहगभै बाबा चुंदरी भईं अनमोल ॥ एहिरे संदुरवा के कारन बाबा छांडेउ मैं देश तोहार ॥ छाँड़ेउ बाबा क अन धन सोनवां माई क सारा भँडार ॥ छाडेउ मैं भैआ कै लाख दोहैआ भौजी कै राम रसोंइ ॥

---

५३ पाठ

लावा परछने की गीति

लौवा न परिछु कौन राम उतै बहिनि

तोहारि ॥ अंगुठी न मोरहु कौने रामउतौ धनिआ तोहारि ॥ ऐसाही सब भाई के नाम से गाया जाता है ॥

---

५४ पाठ

भंवरी की गीति

पहिली भंवरिया के फीरत बाबा अबहू तोहारि हो ॥ दूसरी भंवरिया के फीरत बाबा अबहू तोहारि हो ॥

इसी तरह छठई तक

सतई भंवरिवा के फीरत बाबा भैलिउ परारि हो ॥

---

५५ पाठ

परिछन की गीति

कलसा ले दुलहे रे कलसा ले कलसा सपूरणनहोय ॥ मूसरा लेदुलहे रे मूसरा ले मूसरा सपूरन होई ॥

इसी तरह लोढवा ले ॥

---

५६ पाठ

घर पर बरात लवटि आने पर साइति से मौरी सेर वाई जाती ह याने मौरी और चक्की लोटा वगैरेह का कंकन खोलि के पोख-री मे गाडते हैं पोखरी तक आने जानें की गीति मौरी की गीति कहलाती है ॥

---

५७ पाठ

मौरी की गीति

पांच सगुना मैरे निसरत देखेउ कवनि देई तोहरेह गेह ॥ इसी को कई बार सब आजी वो परआजी के नाम से गाइ के नकटा गाती हुई पोखरी पर पहुचि के तब यह गाती है ॥

पूना पूनै तिनि अरे तुहैरे कवनि देइ ॥ ए आपन पूनबा परिछि लेइ जाउ ॥ न पूना लेइ के अरे न पूना देइ के ,न पूना माँई हाट बिचाइ ॥

यह भी सब पुरनियन के नाम से गाई जाती है॥ तब लवटती है॥ पांच सगुना मैंरे पैठत देखेउ कवनि देइ तोहरेह गेह ॥

५८ पाठ

गौना

जौं दुलहिन शादी होने के साथ अपने पति के घर नहीं आती है या आकर फेर लौट जाती है तो पीछे से अपने पति के घर आने को गौना कहते हैं गौना साल भीतर या तीसरे या पांचवे बरिस बनता है शुक्र का बडा बिचार होता है गौने में सब आही गीतै गाई जाती है जो बियाह में गाई जाती हैं दोंगे में कुछु गीत गाने का दस्तूर नही है

---

५९ पाठ

गृहस्ती

अबतक हमने जो लिखा है सो मनुष्य के जनम से उस की शादी होकर गौना आनेतक का हाल है उसके पीछे जब उसके लडके बाले होते हैं तब से उसको गृहस्ती कहलाती है गृहस्ती कहते हैं उस संगति को जिस में लोग एक दूसरे के साथ सच्चे प्रेम से रहिके एक दूसरे की सच्ची और ईमानदार कमाई और खिद्मद से अपनी जिंदगी अराम से काटते हैं और उसी आपुस की सच्ची सहायता से पर-

लोक को भी सुधार सकते हैं जैसे बचपन में मा बाप लड़के की सेवा करते हैं और बुढ़ौती में लड़के मा बाप की ॥

---

६० पाठ

ग्रहस्तों का आनन्द

गृहस्ती में अपने लड़के बालों की पैदाइश से गौना तक सब काम में ऊपर के लिखे हुए के माफिक गाना बजाना आदि के कारण से स्त्री पुरुष खुशी करते हैं उसके सेवाय तर लिउहार और पूजा स्नान आदि में मा बाप और लड़के बाले समेत उत्साह करते हैं और देवता और अच्छे अच्छे मनुष्यों के मंदिर और देश देश के पदार्थों को देखि के मन को आनंद करते हैं और जहां जहां ऐसे दुखी लोग देखि परते हैं कि जिनको अपने हाथ पांव से अपने प्राण की रक्षा करने की सामर्थ्य नही हैं उन की सहायता करने से अपना जीवन धन्य समुझते हैं और तरह तरह के मकर और फरेब से रहने वालों को और उनकी रहनि को पहिचानते हैं और बहुत सी बुद्धि और खुशी को बढ़ाने वाली

बातों को कागद् पर लिखते जाते हैं जिसको पोथी कहते हैं ॥

---

६१ पाठ

पोथी या पत्र से आनंद

जो लोग खुद देश देश की चीजें देखि के अपने मन को नहीं आनंद करने सकते हैं वे लोग पोथी के द्वारा किसी कदर अपने मन को खुश कर सकते हैं और चिट्ठीपत्री के द्वारा अपना हाल अपने भाई बाप या और किसी से जोदूर रहता हो लिख सकते हैं औरतों को थोड़ी सी मेहनत से अक्षर चीन्ह लेनी बहुत जरूर है क्यों कि उन को अपनी प्यारा मा वगैरह से भेंट होना बहुत ठक ठक है ॥

---

६२ पाठ

तरतिउहाहार की खुशी

तरतिउहार की खुशी देश देश में भिन्न भिन्न प्रकार से होती हैं जौन मुल्क के देहात की तपसील यह है

चैत में

१ चैती आठों का मेला ।

२ रामनौमी का स्नान ॥

वैशाख में

१ सेतु आ संक्रांति
२ कोहड़ी खिलाना

जेठ में

१ दशहरा स्नान

असाढ़ में

१ असाढ़ी जोग

सावन में

१ नाग पंचमी
२ झेलुआ
३ रक्षा बंधन

भादों में

१ कजरी ।
२ ललही छठ ॥
३ कधैआ का जन्म ॥
४ तीज
५ बड़ा अतवार
६ अनंत चौदस

कुआर में

१ विजय दशमी ।

कातिक में

१ देवाली।
२ यमदुतिया॥
३ बडी एकादशी

एगहन में

१ धनुक यज्ञ।

पूस में कुछ नहीं

माह में

१ खिचरवारि।
२ वसंत पंचमी॥

फागुन में

१ शिवरात्रि।
२ होली॥

बारहो महीना में

सत्यनारायन की कथा
भजन
कहानी
जांते की गीति

---

६३ पाठ

चैत का महीना

यही पहिला महीना है शुभ काम के

वास्ते बर्जित है अंधिआरी ८ को चौकिया माता का दर्शन और मेला होता है अंजो-रे परिवा से ९ दिन नवरात्र है ९ के राम-नौमी का स्नान करने बहुधा औरत मर्द सब जाते हैं और अयोध्या जी के मन्दिरों मे मन भावनी मूर्तों का दर्शन करते हैं ॥

---

६४ पाठ

बैसाख से असाढ तक

जिस रोज सूर्य मेष संक्रान्ति पर होते हैं उस दिन नया सतुआ और आम का टिकोरा संकल्पा जाता है और उसी दिन से महीना भरि गाव की कुंआरी लडकियों का पारी पारा सब घर की औरतैं सेतुआ खिलाती हैं लडकियां बहुत खुश होती हैं जेठ मे दशहरा के दिन धपाप नहाने को लोग जाते हैं ॥ असाढ की पुनवासी को औरतैं गोबरसे दरवाजे के बाये दहिने भीति पर खराऊ कीसूरतैं बनाती हैं ॥

---

६५ पाठ

सावन का महीना

अंजोरी पंचमी को नाग का पूजा होता है लावा दूध चढता है बहिनै तालाव मे

गुडिया फेकती हैं भाई लोग बैरि की छडी से गुडियों को पीटते हैं - घर से चलने की बेर औरतैं गाती हैं ॥

---

६६ पाठ

पचैया की गीति

हरा लेइ के निसरु हरवहवा अहिरवा लेइ के गाइ लोइ भैआ लेइ के निसरी बहिनिया बडेइ भिनुसार लोइ ॥ भैआ के गोडवा पनहिया तो झपटल जाइ लोइ बहिनी के हथवा गुडुइआ तो चलिय न जाइ लोइ ॥ माई के पोखल भैइवा तो झपटल जाइ लोइ । सासु कै डाहलि बहि-निया तो चलिय न जाइ लोइ ॥

---

६७ पाठ

झेलुआ वो रखा बंधन

नाग पंचमी से कजरी तक लडकियां झेलुआ झूलती हैं - और गीति गाती हैं पुनवांसी के दिन ब्राह्मन लोग रक्षा बाधते हैं और दक्षिना पाते हैं ॥

---

९८ पाठ

झेलुआ की गीति

कासि कुसेह कर झेलुआ बलैया लेबेउ बीरना भैआ देहिआं छोलिआ छोलि जाइ बलैया लेबेउ बीरन भैया पटवा का झेलुआ नवावहु बलैया लेबेहु बीरन । बहिनी एसौं तो पटवा महंग भै बलैया लेबेउ बीरन । बहिनी अगवां नवौबेउ पटडोरि बलैया लेबेउ बीरन । भैया अगवा तो जाबेउ सजन घर बलैया लेबें उबीरन । बीरना झुलिहैं बहुआ तोहारि बलैया लेबेउ बीरन बहिनी। बहुआं तो जैहैं बीरन घर बलैयाले । बहिनी तोहका आनन हम आउब बलैयाले । बहिनी तोहैंके हम झेलुआ झुलावउ बलैयाले ॥

---

९९ पाठ

भादौं कजरी

भादौं बदी ३ के कजरी होतीहै उस दिन गांव भर की औरतैं पोखरी परजाके एक हांडी को सपेद रंगि के काली बुंदकी और सेंदुर लगाती हैं और पोखरी मे नहाती हैं- ढुनमुनिआ खेलती हैं और गाती हैं

७० पाठ

ललही छठि

भादों की अंधियारी छठ को ललही छठ का व्रत होता है उस दिन जो चीज जोतने बोने से पैदा होती है वह नहीं खाई जाती है इसी से मीठा नहीं खाया जाता है बहुधा उस रोज तीनी का चाउर और भैंस का दही खाने का दस्तूर है यह व्रत औरतों का है मर्द नहीं भूखा रहते हैं ॥

---

७१ पाठ

जन्माष्टमी से अनन्त १४ तक

भादों की अंधियारी अष्टमी के कंधैया के जन्म का उत्साह होता है और व्रत कंधैया होता है आधीरात जनम होता है तब सोहर गाया जाता है हिंदू के मत में यह बड़ी खुशी का दिन है अंजोरी तीज को औरतें तमाम दिन वो राति वे दाना पानी भूखी रहती हैं और किहानी कहिके पूजा करती हैं तीजके दिन बेटी के घर कपड़ा भेजने का बड़ा दस्तूर है उसके बाद जो अतवार परता है सो बड़ा अतवार कहलाता है उस दिन बे निमक का भोजन होता है १४ को अनं-

त चतुर्दशी कहते हैं उस दिन अनंत का व्रत होता है ॥

—

७२ पाठ

कुआर का महीना

कुआर के अंधेरे १ से ९ तक नौरातर का व्रत होता है और १० को रावन के मरने का तमाशा होता है, और अगहन में बेदी पर गोबर से लीपिके फूल पान चढ़ाया जाता है उस दिन अपने परिवार में रहने का और लड़कों को तमाशा देखाने का बड़ा दस्तूर है देश परदेश से लोग अपने घर पर आते हैं ॥

—

७३ पाठ

कातिक का महीना

अमावस को बहुत सा दिया बारा जाता है लड़िकियों को धानका लावा और मिठाई खेलने को दिई जाती है सुबह छोटे २ लड़के चिराग लूटते हैं और उसी की तराजू और संठे की डांडी बनाके धूरि मांटी तोलते हैं और खेलते हैं ॥ दुइज को यम दुइज कह

ते हैं उसी दिन बहिन के घर भाई के खाने का बड़ा दस्तूर है ॥ एकादशी को जिठवन होता है याने भगवान को ऊख और भांटा और बैरिवो फूल पान चढ़ता है और छोटा बड़ा सब कोई फलहार करता है कति-की का स्नान और कंस के बधका तमाशा होता है

---

७४ पाठ

अगहन पूस

अगहन की अजोरी पंचमी को धनुक यज्ञ का मेला और राम चंद्र का बियाह होता है औरतें बियाहे की गीति गाती हैं और लड़की लड़का तमाशा देखने जाते हैं पूस में कुछ नहीं होता है गया करने का महीना है ॥

---

७५ पाठ

माघ का महीना

माघ जब सूर्य मकर राशि पर होते हैं तब खिचरी और तिल संकलपा जाता है उस दिन बड़े सबेरे सब कोई नहाते हैं बड़-

कांके वास्ते चिउड़ा तिलवा लावा और मिठाई मंगाने का बड़ा दस्तूर है अंजोरी पंचमी को बसंत पंचमी कहते हैं, उस दिन आम का बैार देखने का दस्तूर है ॥ उसी दिन से होली तक होली गाई जाती है ॥

---

७६ पाठ

फागुन का महीना

अंधियारी तेरसि को बड़ी शिवरात्रि का ब्रत दिन और राति भर बेदाना और पानी होता है पुर्नवासी को होली का पूजा होता है और होलिका जलती है यह भी बड़ी खुशी का दिन है देश परदेश के सब एकट्ठे होते हैं और रंग डालते हैं और अच्छा २ भोजन बनवाते और खाते हैं ॥

---

७७ पाठ ॥

बैराग कहते हैं उस सभी परकलो की फिकिर को और अपने सिरजनहार से प्रेम करन को जिसके कारण से दुनिआ का सवाद

और नाम वरी की अभिलाषा और दुनियवी फ़िकर से दिल उचट जाता है परंतु ऐसे लोग बहुत कम हैं जो लोग अब वैरागी कह लाते हैं वे केवल एक दूसरी तरह के गृहस्त हैं अर्थात् और तरह से अपनी जिंदगी आराम से बिताते है दुनियां में कई प्रकार की रहनि से लोगों की जिंदगी बितती है परंतु जोबिचार से देखाजाय तो गृहस्थाश्रम की बराबर कोई नहीं है और शास्त्र भी गृहस्त की तारीफ़ करता है इसमें मनुष्य जिस सुख करने से परमात्मा को रंज नहीं होता है सो भोग भी करते हैं और सब तरह के बाना वालों की भी सहायता करि सकते हैं और जिन्ह की सहायता करने से भगवान बहुत राजी रहते है उन्ह की सहायता भी कर ते हैं जो मनुष्य केवल असत खादों से अपना मन बटोरता है वह बड़ा बैरागी है॥

संपूर्ण